E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

छन्द वेदाङ्ग

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

छन्द वेद का पाँचवाँ अङ्ग है। पाणिनीय शिक्षा में कहा गया है कि 'छन्दः पादौ तु वेदस्य'। अर्थात् छन्द वेद पुरुष के पैर हैं। जिस प्रकार पाद (पैर) से हीन मनुष्य लँगड़ा कहा जाता है, उसी प्रकार छन्दों से हीन वेद पुरुष लँगड़ा होता है। अतः वेद-मन्त्रों के उच्चारणके लिये छन्दों का ज्ञान आवश्यक है। छन्दों के ज्ञान के अभाव में मन्त्रों का उच्चारण और पाठ समुचित रूप से नहीं हो पाता। प्रत्येक सूक्त में देवता, ऋषि और छन्द का ज्ञान आवश्यक होता है।

वैदिक छन्दों का सर्वप्रसिद्ध ग्रन्थ कात्यायन की 'सर्वानुक्रमणी' है । पिङ्गलरचित 'छन्दःसूत्र' भी वैदिक छन्दों का सर्वाङ्गपूर्ण विवेचन करने वाला ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ आठ अध्यायों में विभक्त है। उल्लेखनीय है कि प्रायः सभी वैदिक छन्द आक्षरिक हैं तथा उनके अनेक भेद-प्रभेद किये गये हैं। लौकिक छन्दों का विकास भी वैदिक छन्दों के आधार पर हुआ है।

महर्षि कात्यायन का यह सुस्पष्ट मत है कि जो वेदपाठी अथवा याजक (यज्ञ करनेवाला) छन्द, ऋषि और देवता के ज्ञान से हीन होकर मन्त्र का अध्ययन, अध्यापन या यजन करता है, उसका वह प्रत्येक कार्य निष्फल ही होता है। जैसा कि सर्वानुक्रमणी में कहा गया है-

'यो ह वा अविदितार्षेयच्छन्दोदैवतब्राह्मणेन मन्त्रेण याजयति वा अध्यापयति वा स्थाणुं वर्च्छति गर्ने वा पात्यते वा पापीयान् भवति'।

'ऋग्यजुष् परिशिष्ट' के अनुसार सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय छन्दोमय ही है-

छन्दोभूतमिदं सर्वं वाङ्मयं स्याद विजानतः।

नाच्छन्दसि न चापृष्टे शब्दश्चरति कश्चन।।

छन्दस् शब्द की व्युत्पत्ति कई प्रकार से की जाती है। महर्षि यास्कने 'छन्द' शब्द की व्युत्पत्ति 'छद्' धातु से की है। 'छन्दांसि छन्दः' इस कथन का अभिप्राय यह है कि ये छन्द वेद के आवरण हैं,

आवरण के साधन हैं। 'छन्दयति घृणाति रोचते इति छन्दस्' अर्थात् जो रोचक या प्रिय लगे वह छन्दस् है। अन्य व्युत्पत्ति के अनुसार-'छन्दयति आह्लादयति अनेन वा छन्दः' अर्थात् जो चित्त को प्रसन्न करे वह छन्द है । निरुक्तकार यास्क ने भी छन्द शब्द का अर्थ बतलाया है-'मन्त्राः मननात् छन्दांसि छादनात् स्तोमः स्तवनात् यजुः यजतेः इत्यादि' अर्थात् मनन (विचार) वा ध्यान) करने से मन्त्र, छादन (रक्षा) करने से छन्द, स्तुति करने से यजन (यज्ञ) करने से यजुः होता है, इत्यादि।'छन्द' का मुख्य प्रयोजन है-'भाषा का लालित्य'। वेदाध्ययन में छन्दों का अत्यधिक महत्त्व है। छन्दों के ज्ञानाभाव में वेदाध्ययन पाप माना जाता है ।

वेदाङ्ग में उपयुक्त मुख्य छन्दों के नाम संहिता और ब्राह्मणग्रन्थोंमें उपलब्ध होते हैं जिससे प्रतीत होता है कि इस अङ्ग की उत्पत्ति वैदिक युग में ही हुई। इस पाँचवें वेदाङ्ग का आधार-ग्रन्थ है पिङ्गलाचार्यकृत 'छन्दःसूत्रम्'। इस महनीय ग्रन्थ 'छन्दः सूत्रम्' के रचयिता आचार्य पिङ्गल हैं। यह ग्रन्थ सूत्ररूप में है और आठ अध्यायों में विभक्त है। प्रारम्भ से चौथे अध्याय के सातवें सूत्रतक वैदिक छन्दों के लक्षण हैं। तदनन्तर लौकिक छन्दों का वर्णन है।

प्रचलित लौकिक काव्यों में छन्द और पादबद्धता का सम्बन्ध इतना घनिष्ठ है कि पद्यों में ही छन्दों की योजना होती है और गद्य छन्दरहित होते हैं, परंतु वैदिक छन्द के विषय में यह धारणा नितान्त भ्रान्त है। प्राचीन आर्य-परम्परा के अनुसार गद्य भी छन्दयुक्त माना जाता है। दुर्गाचार्य ने निरुक्त की वृत्तिमें लिखा है कि छन्द के बिना वाणी उच्चरित नहीं होती। यथा-'नाच्छन्दसि वागुच्चरति'।

भरतमुनि भी छन्दसे रहित शब्दको स्वीकार नहीं करते। उनका कहना है-'छन्दोहीनो न शब्दोऽस्ति न छन्दः शब्दवर्जितम्'।

कात्यायनमुनि ने भी इसका समर्थन करते हुए कहा है कि वेद का ऐसा कोई मन्त्र नहीं है, जो छन्दों के माध्यमसे न बना हो। फलतः यजुर्वेद के मन्त्र भी जो निश्चय ही गद्यात्मक हैं, वे छन्दों से रहित नहीं हैं। अतएव प्राचीन आचार्यों ने एक अक्षर से लेकर १०४ अक्षरों तक के छन्दों का विधान अपने ग्रन्थों में किया है।

वैदिक छन्द -

वैदिक छन्दों की यह विशेषता है कि ये अक्षर गणना में नियत होते हैं अर्थात् अक्षरों से गुरु-लघु के क्रम का कोई विशेष नियम नहीं रहता। अतएव कात्यायन ने सर्वानुक्रमणी में इसका लक्षण किया है-'यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः'। यहाँ यह ध्यातव्य है कि अनेक शताब्दियों के अनन्तर वैदिक छन्दों से ही लौकिक छन्दों का आविर्भाव हुआ। लौकिक छन्दों में चार पाद होते हैं और वैदिक छन्दों में ऐसा कोई नियम नहीं है। वेद-प्रयुक्त छन्दों में कहीं लघु-गुरु मात्राओं का अनुगमन नहीं है। वहाँ केवल अक्षरों की गणना होती है, जिससे समस्त वैदिक छन्द अक्षरों पर ही आश्रित हैं। अक्षर से यहाँ तात्पर्य स्वरसे है।

वैदिक छन्दोंके मुख्य भेद

वैदिक छन्दोंके मुख्य भेदों के विषय में ऐकमत्य नहीं है, परंतु समस्त वैदिक छन्दों की संख्या २६ है। इनमें प्राथमिक ५ छन्द वेद में अप्रयुक्त हैं। उनको छोड़कर अवशिष्ट छन्दोंको हम तीन सप्तकों में बाँट सकते हैं। प्रयुक्त छन्दों में गायत्री प्रथम छन्द है, जिसके प्रत्येक पादमें ६ अक्षर होते हैं। अतः प्रथम सप्तक गायत्री से प्रारम्भ होता है। इसके पूर्व के पाँच छन्द 'गायत्री पूर्वपञ्चक' के नाम से विख्यात हैं। उनके नाम हैं- (१) मा, (२) प्रमा, (३) प्रतिमा, (४) उपमा और (५) समा– ये नाम ऋक् प्रातिशाख्यके अनुसार हैं। अन्य ग्रन्थों में इनसे भिन्न नाम हैं, जैसे- भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में उनके क्रमानुसार नाम ये हैं– उक्त, अत्युक्त, मध्यम, प्रतिष्ठा और सुप्रतिष्ठा। वैदिक छन्दों के नाम हैं- गायत्री (२४), उष्णिक् (२८), अनुष्टुप् (३२), बृहती (३६), पंक्ति (४०), विष्टुप् (४४), जगती (४८), अति जगती (५२), शक्करी (५६), अति शक्करी (६०), अष्टि (६४), अत्यष्टि (६८), धृति (७२), अति घृति (७६), कृति (८०), प्रकृति (८४), आकृति (८८), विकृति (६२), संस्कृति (६६), अभिकृति (१००) और उत्कृति (१०४) ।

ब्राह्मण ग्रन्थों में, विनियोग-विधान के विषय में, द्रव्य, देवता और यजमान के प्रयोजनानुरूप विविध छन्दोविषयक विकल्प प्रदत्त हैं। उदाहरण के लिए गायत्री ब्रह्मवर्चस्, उष्णिक् आयुष्य, अनुष्टुप् स्वर्ग, बृहती श्री, पंक्ति यज्ञ, त्रिष्टुप् शक्ति-सामर्थ्य एवं जगती पशु-प्राप्ति में विशेष सहायक छन्द हैं। ब्राह्मणों के अतिरिक्त छन्दोविषयक प्राचीन विवरण शांखायन श्रौतसूत्र, ऋक् प्रातिशाख्य, सामवेदीय

निदानसूत्र, पिंगल प्रणीत छन्दः सूत्र तथा कात्यायन एवं अन्य आचार्यों के द्वारा प्रणीत छन्दोऽनुक्रमणियों में उपलब्ध है। यों, इनमें सर्वाधिक सामग्री पिंगलाचार्य के 'छन्दः सूत्र' में ही है।

वैदिक छन्द में एक या दो अक्षरों की अधिकता अथवा न्यूनता से कोई अन्तर नहीं पड़ता। यदि किसी छन्द के अक्षरों में एक कम हो, तो उससे पहल 'निचृत्' विशेषण तथा एक अक्षर अधिक होने पर 'भुरिक्' विशेषण लगा देते हैं। जैसे गायत्री में २४ अक्षर होते हैं, किन्तु २३ अक्षरों के होने पर उसे 'निचृद्गायत्री' और २५ अक्षरों के होने पर 'भुरिग् गायत्री' कहा जाता है जिनमें दो अक्षर कम होते हैं उन्हें 'विराट' तथा जिनमें दो अक्षर अधिक होते हैं उन्हें 'स्वराट्' विशेषण से युक्त कर देते हैं। उदाहरण के लिए २२ अक्षरों वाली गायत्री 'विराट् गायत्री' तथा २६ अक्षरों वाली 'स्वराट् गायत्री' कहलाती है।